# पाठ 5
# ईदगाह

**आइए सीखें:-** ● कहानी कहने की कला ● आपसी सद्‌भाव-प्रेम का महत्व तथा संवेदनशीलता का महत्व ● समानार्थी शब्द ● मुहावरे ● प्रत्यय ● वाक्य के प्रकार ● विशेषण, विशेष्य

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है? वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है। आज का सूर्य देखो,कितना प्यारा, कितना शीतल है, मानों संसार ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है? ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोजा रखा है किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज है। रोज ईद का नाम रटते थे, आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते? सभी बार-बार जेब से अपना खजाना निकाल कर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक दो, दस-बारह उसके पास बारह पैसे हैं मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पन्द्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनती पैसों में अनगिनती चीजें लाएँगे- खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और जाने क्या-क्या?

सबसे ज्यादा प्रसन्न है, हामिद। वह चार-पाँच साल का गरीब, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई। किसी को पता न चला क्या बीमारी है? कहती तो कौन सुनने वाला था? दिल पर जो कुछ बीतती थी, वह दिल में ही सहती थी और जब न सहा गया, तो संसार से विदा हो गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रुपये कमाने गए है, बहुत-सी थैलियाँ लेकर आएँगे। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बड़ी अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई हैं, इसलिए हामिद प्रसन्न है। आशा तो बड़ी चीज है, और फिर बच्चों की आशा। उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है। उसके अब्बाजान थैलियाँ और अम्मीजान नियामतें लेकर आएँगी, तो वह दिल के अरमान निकाल लेगा। तब देखेगा, मोहसिन, नूरे और सम्मी कहाँ से उतने पैसे निकालेंगे। अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज

**शिक्षण संकेत:-** ● कहानी का हावभाव के साथ वाचन करें तथा बच्चों से भी कराएँ ● कहानी में आए संवादों को अलग-अलग बच्चों के माध्यम से या स्वयं आवाज बदलकर प्रस्तुत करें। ● बच्चों में संवेदन शीलता जगाएँ। ● कहानी में आए कठिन शब्दों एवं मुहावरों की व्याख्या करें तथा वाक्य प्रयोग आदि विधियों द्वारा उनके अर्थ स्पष्ट करें। ● अन्य सद्‌भाव (भाईचारे) वाले त्यौहार के बारे में चर्चा कराएँ।

ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं। आज आबिद होता, तो क्या इसी तरह ईद आती और चली जाती। इस अन्धकार और निराशा में वह डूबी जा रही है।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है-तुम डरना नहीं अम्माँ, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है? उसे कैसे मेले जाने दे? उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाए तो क्या हो? नहीं, अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्ही-सी जान चलेगा कैसे? पैर में छाले पड़ जायँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद में ले लेगी, लेकिन यहाँ सेवैयाँ कौन पकाएगा? पैसे होते तो लौटते-लौटते सब सामग्री जमा करके चटपट बना लेती। यहाँ तो घंटों चीजें जमा करते लगेंगे। माँगे ही का तो भरोसा ठहरा। उस दिन फहीमन के कपड़े सिले थे। आठ आने पैसे मिले थे। उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए, लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गई तो क्या करती? हामिद के लिए कुछ नहीं है, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में पाँच अमीना के बटुवे में। यही तो बिसात है और ईद का त्यौहार, अल्लाह ही बेड़ा पार लगाए। बच्चे को खुदा सलामत रखे, ये दिन भी कट जाएँगे।

गाँव से मेला चला और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों का इन्तजार करते। यह लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं। हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है? शहर पास आ गया हलवाइयों की दुकानें शुरु हुई। आज खूब सजी हुई थीं। इतनी मिठाइयाँ कौन खाता है? देखो न, एक-एक दुकान पर मनों होंगी।

आगे चलने पर बस्ती घनी होने लगी। ईदगाह जाने वालों की टोलियाँ नजर आने लगीं। एक से एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए। कोई इक्के-ताँगे पर सवार, कोई मोटर पर, सभी इत्र में बसे, सभी के दिलों में उमंग। ग्रामीणों का यह छोटा-सा दल अपनी विपन्नत्ता से बेखबर, संतोष और धैर्य में मगन चला जा रहा था। बच्चों के लिए नगर की सभी चीजें अनौखी थीं। जिस चीज की ओर ताकते, ताकते ही रह जाते और पीछे से बराबर हार्न की आवाज पर भी न चेतते। हामिद तो मोटर के नीचे जाते-जाते बचा।

सहसा ईदगाह नजर आया। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फर्श है, जिस पर जाजिम बिछा हुआ है और रोजेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गई हैं, पक्की जगत के नीचे तक, जहाँ जाजिम भी नहीं है। नए आने वाले आकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं है। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गए। कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था। लाखों सिर एक साथ सजदा में झुक जाते हैं, फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ

प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएँ, और यही क्रम चलता रहे। कितना अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएँ, विस्तार और अनंतता हृदय की श्रद्धा, गर्व और आत्मानंद से भर देती थी, मानो भ्रातत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है।

नमाज खत्म हो गई है। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकान पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी जमीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का एक तिहाई जरा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह -तरह के खिलौने हैं-सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और साधु। वाह! कितने सुन्दर खिलौने हैं। अब बोला ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला कंधे पर बंदूक रखे हुए, मालूम होता है, अभी कवायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी हुई है, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है। शायद कोई गीत गा रहा है। बस, मशक से पानी उड़ेला ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वत्ता है उसके मुख पर। काला चोगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहा है। यह सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने मँहगे खिलौने वह कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े, तो चूर-चूर हो जाए। जरा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा, किस काम के!

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने

सोहनहलवा। मजे से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीजों की, कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया,दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितना प्रसन्न होंगी। फिर उनकी ऊँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा? व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। जरा देर ही तो खुशी होती है। फिर तो खिलौने को कोई आँख उठाकर भी नहीं देखता। यह तो घर पहुँचते-पहुँचते टूट-फूट बराबर हो जायँगे। चिमटा कितने काम की चीज है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो, कोई आग माँगने आए, तो चटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो। अम्माँ बेचारी को कहाँ फुरसत है कि बाजार आएँ और इतने पैसे ही कहाँ मिलते हैं? रोज हाथ जला लेती हैं।

हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सबके सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अगर किसी ने कोई काम करने का कहा तो पूछूँगा। खाएँ मिठाइयाँ, आप मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुन्सियाँ निकलेंगी, आप ही जबान चटोरी हो जाएगी। तब घर से पैसे चुराएँगे और मार खाएँगे। किताब में झूठी बातें थोड़े ही लिखी हैं। मेरी जबान क्यों खराब होगी? अम्माँ चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी-मेरा बच्चा! अम्माँ के लिए चिमटा लाया है। हजारों दुआएँ देंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चरचा होने लगेगी हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन खिलौनों पर कौन इन्हें दुआएँ देगा? बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं। मेरे पास पैसे नहीं हैं तभी तो मोहसिन और महमूद यों मिजाज दिखाते हैं। मैं भी इनसे मिजाज दिखाऊँगा। खेलें खिलौने और खाएँ मिठाइयाँ। मैं नहीं खेलता खिलौने से , किसी का मिजाज क्यों सहूँ? मैं गरीब सही, किसी से कुछ माँगने तो नहीं जाता। आखिर अब्बाजान कभी न कभी आएँगे अम्माँ भी आएँगी ही फिर इन लोगों से पूछूँगा, कितने खिलौने लोगे? एक-एक को टोकरियों खिलौने दूँ और दिखा दूँ कि दोस्तों के साथ इस तरह सलूक किया जाता है। यह नहीं कि एक पैसे की रेवड़ियाँ लीं तो चिढ़ा-चिढ़ाकर खाने लगे। सबके सब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है। हँसें मेरी बला से! उसने दुकानदार से पूछा-यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा-तुम्हारे काम का नहीं है जी!

'बिकाऊ है कि नहीं?''

''बिकाऊ क्यों नहीं है? और यहाँ क्यों लाद लाए हैं?''

''तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?''

''छ: पैसे लगेंगे।''

हामिद का दिल बैठ गया।

''ठीक-ठीक बताओ।''

''ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो तो लो, नहीं चलते बनो।''

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा-तीन पैसे लोगे?

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दी। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कन्धे पर रखा, मानो बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। जरा सुने, सबके सब क्या-क्या आलोचनाएँ करते हैं।

मोहसिन ने हँसकर कहा- यह चिमटा क्यों लाया पगले, इसे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को जमीन पर पटककर कहा-जरा अपना भिश्ती जमीन पर गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जाएँ बच्चू की।

महमूद बोला- तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद-खिलौना क्यों नहीं है। अभी कन्धे पर रखा बंदूक हो गई। हाथ में लिया, फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौने कितना ही जोर लगाएँ, मेरे चिमटे का बाल भी बांका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है चिमटा।

सम्मी ने खंजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला-मेरी खंजरी से बदलोगे दो आने की है।

हामिद ने खँजरी की ओर उपेक्षा से देखा-मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब-ढब बोलने लगी, जरा-सा पानी लग जाए, तो खत्म हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आँधी में,तूफान में बराबर डटा खड़ा रहेगा।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन पैसे किसके पास धरे हैं? फिर मेले से दूर निकल आए हैं। नौ कब के बज गए, धूप तेज हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी हो रही है। बाप से जिद भी करें तो चिमटा नहीं मिल सकता। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए बदमाश ने अपने पैसे बचा रखे थे।

ग्यारह बजे गाँव में हलचल मच गई। मेलेवाले आ गए। मोहसिन की छोटी बहन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और सुरलोक सिधारे।

वकील साहब के लिए दीवार में दो खूँटिया गाड़ी गई। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। मालूम नहीं पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्ग लोक से मृत्यु लोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया।

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का चार्ज मिल गया, लेकिन पुलिस का

सिपाही कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं, जो अपने पैरों चले। वह पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आई, जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटे। नूरे ने यह टोकरी उठाई और द्वार का चक्कर लगाने लगे। उसके दोनों भाई सिपाही की तरह 'छोने वाले, जागते लहो' पुकारते चलते हैं। मगर रात अँधेरी होनी चाहिए, महमूद को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बन्दूक लिए जमीन पर आ जाते है और उनकी एक टाँग में विकार आ जाता है।

महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह अच्छा डॉक्टर है। उसको ऐसा मरहम मिल गया है, जिससे वह टूटी टाँग को आनन-फानन जोड़ सकता है। केवल गूलर का दूध चाहिए। टाँग जोड़ दी जाती है लेकिन सिपाही को ज्यों ही खड़ा किया जाता है टाँग जवाब दे देती है। शल्यक्रिया असफल हुई, तब उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ दी जाती है। अब कम से कम एक जगह आराम से बैठ तो सकता है। एक टाँग से न तो चल सकता था न बैठ सकता था। अब वह सिपाही सन्यासी हो गया है।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

'यह चिमटा कहाँ था'

"मैंने मोल लिया है।"

"कै पैसे में?"

"तीन पैसे दिए।"

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ कुछ खाया, न पिया। लाया क्या, चिमटा! सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?

हामिद ने अपराधी भाव से कहा-तुम्हारी ऊँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, सदभाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा? इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बूढ़ी दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्‌गद हो गया। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता।

- मुंशी प्रेमचन्द

**लेखक परिचय :-** प्रेमचन्द का वास्तविक नाम मुंशी धनपतराय था। उनका जन्म काशी के पास 'लमही' नामक ग्राम में हुआ था। उन्होंने आरम्भ में उर्दू और बाद में अँग्रेजी शिक्षा प्राप्त की। क्वींस कॉलेज बनारस में बी.ए. की शिक्षा प्राप्त की। मुंशी प्रेमचन्द ने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी हैं। आपको कहानी सम्राट व उपन्यास सम्राट कहा जाता है।

बोध प्रश्न-

1. **निम्नांकित शब्दों के अर्थ पुस्तक में दिए शब्दकोश से खोजकर लिखिए-**

| | | | |
|---|---|---|---|
| मनोहर- | ..................... | प्रदीप्त - | ..................... |
| सुहावना- | ..................... | पृथक- | ..................... |
| कचोटना- | ..................... | प्रगल्भ- | ..................... |
| विपन्नता- | ..................... | जब्त- | ..................... |

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

(क) बच्चों को ईदगाह जाने की जल्दी क्यों पड़ी थी?

(ख) ईदगाह पर किस तरह का दृश्य था?

(ग) मेले का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

(घ) ईदगाह में कौन-कौन सी दुकानें सजी थीं?

(ङ) नूरे का वकील कैसा सजा था?

(च) हामिद ने ईद के मेले से चिमटा ही क्यों खरीदा?

(छ) हामिद के चिमटे को देखकर दादी नाराज क्यों हुई? क्या दादी की यह नाराजगी वास्तविक थी?

3. **किसने कौन सा खिलौना खरीदा ? सही जोड़ियाँ मिलाइए तथा खिलौने पर एक-एक वाक्य लिखिए ?**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (क) | मोहसिन | - | सिपाही |
| (ख) | महमूद | - | भिश्ती |
| (ग) | हामिद | - | वकील |
| (घ) | नूरे | - | चिमटा |

4. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-**

(क) ......................... के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आई है।

(ख) लाखों सिर एक साथ............................में झुक जाते हैं।

(ग) मानो ................का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए हैं।

(घ) इस्लाम की निगाह में सब.......................हैं।

(ङ) बुढ़िया का क्रोध तुरन्त .......................में बदल गया।

## भाषा अध्ययन

1. **दिए गए शब्दों के हिन्दी समानार्थी शब्द चुनकर लिखिए-**

(स्वभाव, भाग्य, दृष्टि, समाचार, संसार, विचित्र, कुशल, उपवास)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रोजा, | ............ | सलामत, | ............ | निगाह, | ......... | मिजाज, | ........... ... |
| तकदीर, | ............ | ख़बर, | ........... | जहान, | .......... | अजीब। | .............. |

2. **निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए**

| मुहावरा | अर्थ | वाक्य प्रयोग |
|---|---|---|
| मुँह चुराना, | नजर से बचना | ...................... |
| उल्लू बनाना, | मूर्ख बनाना | ...................... |
| बाल बाँका न होना, | नुकसान न पहुँचना | ...................... |
| सुरलोक सिधारना, | मृत्यु होना | ...................... |
| गद्‌गद होना, | प्रसन्न होना | ...................... |

3. **उदाहरण के अनुसार दिए गए शब्दों के बहुवचन बनाइए-**

खिलौना < खिलौने / खिलौनों

लड़का < ............... / ...............

औरत < ............... / ...............

पैसा < ............... / ...............

**पढ़िए और समझिए-**

एक बार मोहन इन्दौर गया। उसके साथ श्याम नहीं गया था। मोहन ने वहाँ क्या देखा? जब श्याम ने जानना चाहा, तब मोहन ने कहा। अरे! तुमने अभी तक इन्दौर नहीं देखा। शायद तुम्हारे पिताजी ने तो देखा होगा। तुम भी इन्दौर देखने जाओ। मैं चाहता हूँ, ईश्वर तुम्हारी इन्दौर देखने की इच्छा पूरी करे

**उपर्युक्त अनुच्छेद में विभिन्न प्रकार के वाक्य दिए गए हैं। इनमे ध्यान से देखा जाए तो इनका आशय अर्थ के अनुसार-**

1. एक बार मोहन इन्दौर गया। - किसी काम का होना पता चलता है।
2. मोहन ने वहाँ क्या देखा? - प्रश्न का बोध
3. उसके साथ मोहन नहीं गया था।- निषेध (न होने) का बोध।
4. जब श्याम ने जानना चाहा, तब मोहन ने कहा। - एक क्रिया को दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का संकेत।
5. अरे! तुमने अभी तक इन्दौर नहीं देखा। - विस्मय (आश्चर्य) का भाव
6. शायद तुम्हारे पिताजी ने तो देखा होगा- सन्देह या सम्भावना।
7. तुम भी इन्दौर देखने जाओ - आज्ञा बोध।
8. ईश्वर तुम्हारी इन्दौर देखने की इच्छा पूरी करे- इच्छा का बोध।

**अब जानिए-**

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ प्रकार होते हैं-

**1. विधानवाचक वाक्य-** जिन वाक्यों से किसी क्रिया के करने का बोध हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहते हैं।

**2. निषेधवाचक वाक्य-** जिन वाक्यों से किसी कार्य के निषेध (न करने) का बोध हो।

**3. प्रश्नवाचक वाक्य-** जिन वाक्यों से प्रश्न किया जाए, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

**4. विस्मयादि बोधक-** जिन वाक्यों से आश्चर्य (विस्मय), हर्ष, शोक, घृणा आदि का बोध होता है। उन्हें विस्मयादिबोधक वाक्य कहते है।

**5. आज्ञा वाचक वाक्य-**जिन वाक्यों में किसी बात या कार्य के लिए आज्ञा, प्रार्थना अथवा उपदेश का भाव रहता है। उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं।

**6. इच्छा बोधक वाक्य -** जहाँ इच्छा, आज्ञा, शुभकामना आशीर्वाद अभिशाप का भाव प्रकट किया जाता है, उन्हें इच्छाबोधक वाक्य कहते हैं।

**7. सन्देह बोधक वाक्य-** जिन वाक्यों में सन्देह या सम्भावना का बोध होता है उन्हें सन्देहबोधक वाक्य कहते हैं।

**8. संकेत वाचक या शर्त बोधक वाक्य** -जिन वाक्यों से एक क्रिया के दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध हो, उन्हें शर्त बोधक या संकेत वाचक वाक्य कहते हैं।

4. इस पाठ में से अर्थ के आधार पर विभिन्न प्रकार के वाक्य छाँटकर लिखिए-

**पढ़िए और समझिए-**

1. मेरे पास काला घोड़ा है।

2. मीठे आम लाओ।

3. योग्य व्यक्ति उन्नति करते हैं।

4. सुन्दर लड़की आ रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में-काला, मीठे, योग्य, सुन्दर शब्द क्रमशः घोड़ा, आम, व्यक्ति और लड़की की विशेषता बता रहे हैं।

**अब जानिए**

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे-काला, मीठे, योग्य, सुन्दर।

जिस शब्द (संज्ञा या सर्वनाम) की विशेषता बतलाई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं। जैसे-घोड़ा, आम, व्यक्ति, लड़की।

5. इस पाठ में से विशेषण और विशेष्य शब्द चुनकर उदाहरण के अनुसार तालिका में लिखिए-

| | विशेषण | विशेष्य |
|---|---|---|
| दुबला पतला लड़का | दुबला-पतला | लड़का |
| ........................ | .................... | .................... |
| ........................ | .................... | .................... |
| ........................ | .................... | .................... |

## योग्यता विस्तार

1. अपने विद्यालय के पुस्तकालय से या अन्य जगहों से मुंशी प्रेमचन्द की अन्य कहानियाँ प्राप्त कर उनका भी अध्ययन कीजिए।
2. इसी तरह से किसी राष्ट्रप्रेमी या संवेदनशील बालक की कहानी यादकर बालसभा में सुनाइए।

**चर्चा कीजिए-**

3. हामिद की जगह आप होते तो मेले से क्या खरीदते और क्यों?
4. हामिद के मित्र जब मिठाई और खिलौने खरीद रहे थे उस समय हामिद के मन में क्या क्या विचार उठे होंगे सोचिए और बताइए।